Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 7 | March 2015 ISSN:- 2393-8900

Research Article

उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में ऐतिहासिक बोध

डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार
देशभक्त संभाजीराव गरड महाविद्यालय मोहोळ.

प्रस्तावना –

इतिहास केवल किसी देश के गत वैभव का सुरक्षित दस्तावेज ही नहीं होता, अपितु वह वर्तमान पीढ़ियों के जीवनयापन पद्धति का मूल आधार भी होता है। इतिहास भविष्य के लिए दिशा निर्देश करनेवाला कालजयी प्रेरणास्रोत होता है। श्री श्रीकांत वर्मा जी के शब्दों में "हजारों वर्षों से लेकर अब तक, स्पार्टाकस से लेकर नीग्रो तक, मनुष्य की स्वतंत्रता का इतिहास गौरवशाली, कितना बर्बर, कितना भयावह और कितना जरूरी था। शताब्दियों का यह रोजनामचा केवल कला और सौंदर्य का लेखा–जोखा नहीं। उस पर मनुष्य के समस्त अपराध, हत्याएँ, बलात्कार, नरमेध भी दर्ज हैं। अभी कल ही तो बंगलादेश में दस लाख स्त्री–पुरुषों को जिहब कर दिया गया था। अभी कुछ ही दिन तो हुए वीएतनाम पर 2 करोड़ 60 लाख टन बारुद बरसाई गई थी। और अभी बहुत दिन नहीं हुए जब हिटलर ने अपने यातना–शिविरों और गैस–चैंबरों में लाखों यहूदियों को कंकाल में परिणत कर दिया था।.....हिटलर को भूलना नहीं, बल्कि 20 वीं शताब्दी के पागल इन्सानों और तानाशाहों की बर्बर इच्छा के चरम उत्कर्ष के रूप में याद रखना जरुरी है। आदमी का एक हाथ हत्या के लिए कभी भी उठ सकता है। ऐसे समय के लिए–हत्या को रोकने के लिए–मनुष्य को उसकी तसवीर दिखाना जरुरी है, जो साधारण कल्पना से परे होती है।" वर्तमान जीवन को सुखकर बनाने हेतु इतिहास से बोध लेना अत्यंत आवश्यक है।

विश्व इतिहास में कई ऐसे तानाशाह हुए हैं, जिन्होंने इतिहास को बदलने की चेष्टा की। स्वयं को सबसे बड़ा सम्राट घोषित किया परंतु उनकी मृत्यु के पश्चात्य जनता की निंदा का विषय बने। चीन के सम्राट 'वैंग चिंग' (शिंह ह्वांग–ति) का कहना था कि, "इतिहास शुरू होता है उससे! उसके पहले का सारा इतिहास भुला दिया जाए, वह सर्वप्रथम सम्राट माना जाए, इतिहास उससे शुरू हो और जब तक इतिहास रहे, तब तक उसी का वंश चलता रहे। और इसीलिए अपने वंश के राज्य की रक्षा के लिए उसने करोड़ों प्रजाननों को लगाया इस दीवार को उठवाने में। भविष्य की रक्षा तो यों सोच ली गई, पर अब अतीत से छुटकारा कैसे मिले? उसने हुक्म दिया कि वैद्यक और विज्ञान की कुछ किताबें छोड़कर वे सारी पुस्तकें जला दी जाएँ, जिनमें अतीत काल का जिक्र हो। उसका खास क्रोध कन्फ्यूशियस पर था।" उसने चीनी जनता पर अत्यंत अमानवीय अत्याचार किए। परंतु उसकी मृत्यु के साथ ही "चीन वंश खत्म हो गया। उसके बाद एक कदम भी नहीं चल सका। उसके शासन काल में लोगों ने कन्फ्यूशियस के ग्रंथ गुफाओं में छिपा दिए थे, या घडों में बंद कर जमीन में गाड़ दिए थे। उसके मरते ही कन्फ्यूशियस के ग्रंथ फिर से निकल आए।" आतताइयों का इतिहास मनुष्य की बर्बर मनोवृत्ति की ओर इंगित करता है।

इतिहास की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं से मानवीय गुणों पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। मुघलों का इतिहास बर्बर शासकों का इतिहास रहा है। परंतु कुछ मुघल शासक अपनी मानवता के लिए भी विख्यात हैं। मांडव गढ़ में "गयासुद्दीन की उनके बेटे नासिरुद्दीन ने तख्त के लिए जहर देकर हत्या कर दी थी। वे भी यहाँ दफनाए गए।

उसके पूरे 107 वर्ष बाद, जब जहांगीर नूरजहाँ के साथ मांडव देखने आए, तो उन्हें इसी महल में नासिरुद्दीन की कब्र देखकर पितृ–हत्या जैसे निंद्य कर्म के प्रति बेहद नफरत हुई। इतनी नफरत हुई, इतना क्रोध आया कि उनकी आत्मा इसे बर्दाश्त नहीं कर सकी और उन्होंने उसी समय उस कब्र को खुदवाकर नर्मदा में फिकवा दिया। इस तरह एक ही वंश के दो व्यक्तियों में से एक को अपने दुष्कर्मों के परिणाम–स्वरूप ठुकराकर और दूसरे के सत्कर्मों को शिरोधार्थ करते हुए यह महल आज भी खड़ा है।"

इसी प्रकार मांडव गढ़ पर "एक बार दक्षिण जीतकर लौटते समय महान मुगल सम्राट अकबर यहीं ठहरे थे और यहाँ ठहरकर उन्होंने देखा खिलजी सुल्तानों के पुराने सूने पड़े हुए महलों को। एक क्षण में सृष्टि के

आरंभ से आज तक का, व्यक्ति के जीवन से मृत्यु तक का और विश्व के पतन एवं उत्थान का इतिहास उनकी आँखों में घूम गया। एक क्षण तक वे कुछ भी न समझ पाए कि उस युग के ये महान सम्राट आज अभी–अभी इस किस युग में विचरण कर रहे हैं। सारी सृष्टि अपनी कील पर पूरा चक्कर लगा गई और अखिल ब्रह्मांड उनकी आँखों के सामने ही एक बार अपनी पूरी शक्ति से औंधा होकर सीधा हो गया। तब उन्हें एक क्षण को, सिर्फ एक क्षण भर को, इस नाशवान मानवीय जगत का स्मरण और संसार की असारता का खयाल हो आया था और तभी इस विषय पर उन्होंने कविता लिखी थी, जो आज भी इस मंदिर के शिला–खंड पर ज्यों–कि–त्यों अंकित है। यह सब निमिष भर में हो गया और फिर तो सम्राट सम्राट थे और संसार संसार, लेकिन मानवीय इतिहास का यह वह महान क्षण था, जिसने संसार के इतिहास में अनेक आश्चर्यजनक परिवर्तन किए हैं।" मानवीय गुणां के अध्ययनार्थ भी इतिहास से सहायता ली जा सकती है।

इतिहास का वर्तमान जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है? किसी देश के निवासी ऐतिहासिक चरित्रों के प्रति कितने आस्थावान हैं? इन प्रश्नों की ओर भी यात्राकारों का ध्यान गया है। जर्मनी के बर्बर शासक हिटलर के प्रति सर्वसामान्य जनता के आज क्या विचार हैं, इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए श्री राजेंद्र अवस्थी जी लिखते हैं–"मैंने पूछा, "आप नहीं मानते, हिटलर जैसा व्यक्ति युगों में कभी पैदा होता है। एक अकेला आदमी समूची जाति पर निरंकुश शासन करने की हिम्मत करे, कोई खेल नहीं है।" हमारा गाइड उत्तेजित हो उठा। उसके चेहरे पर खून उतर आया था। तब भी अपनी भावनाओं को दबाते हुए उसने कहा था, "आप हमारे मेहमान हैं, इस प्रसंग को मत छेड़िए।"

मैं उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए कटिबद्ध था। यदि वह मेरे गालों पर चपत भी लगा देता तो मैं हँसते हुए सह लेता। मैंने अपनी बात फिर दोहराई तो उसने कार रुकवा दी और बोला, "सर, ही (हिटलर का उसने नाम नहीं लिया) वाज ए रास्कल, ही वाज ए स्वाइन...।" उसने थूक दिया।.....ऐसी ही प्रतिक्रियाएँ युवा लड़कियों ने भी प्रकट की थीं। समूचे जर्मनी में हिटलर का कोई स्मारक नहीं है। कोई प्रस्तर–मूर्ति नहीं है। उसके रहने से लेकर सरकारी दफ्तर तक का कोई चिह्न सुरक्षित नहीं रखा गया।" स्पष्ट है कि आज भी जर्मनी में हिटलर के प्रति अत्यंत रोष है।

फ्रान्स के लोग नेपोलियन के प्रति अत्यंत श्रद्धावान हैं। आज "पेरिस में जगह–जगह नेपोलियन जीवित है। नेपोलियन का घर, उसका कार्यालय, उसके हथियारों का संग्रहालय और फिर स्वयं नेपोलियन की प्रस्तर प्रतिमाएँ। पेरिस घूमते हुए निरंतर लगता रहा, हम अब भी नेपोलियन के साथ चल रहे हैं।"

स्पष्ट है कि इतिहास में सत् एवं असत् सभी का वर्णन मिलता है। परंतु वर्तमान पर वहीं प्रभाव डालता है जो देश एवं प्रजा के हित रक्षणार्थ प्रयत्नशील रहता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्वजों की ऐतिहासिक दाय के प्रति आस्थावान होता ही है। भारत से मॉरीशस लाए गए बंदियों का इतिहास उनके जीवन का परिचायक है। "पूर्वज कहाँ से इस धरती पर आए थे, कितने कष्ट, विपत्ति, बूटों और हंटरों की मार उन्होंने सही थी, गन्ने के खेतों में पशुओं के समान कब तक वे जूझते रहे थे–लेकिन आज उन्हीं की संतानें समुद्र की ऐकांतिक गोद में, हीरे के कण के समान इस द्वीप में, स्मृतियों की धरोहर बनाकर जिस प्रकार सीना तानकर खड़ी हैं, यह इतिहास का गौरवान्वित सत्य है। तभी तो यहाँ के प्रधानमंत्री डॉ. शिवसागर रामगुलाम यह कहते हैं कि हमारी सारी उपलब्धि 'प्रतापी पुरखों' की देन है।"

इसी प्रकार कालापानी "जेल की दीवारों पर उन राष्ट्रीय बंदियों के प्रांतवार नाम–पट्ट टंगे हैं, जो एक ओर रोमांच पैदा करते हैं, तो दूसरी ओर गौरव का भान कराते हैं। भारत माता की गोद का कोई ऐसा हिस्सा बाकी नहीं था, जहाँ के स्वतंत्रता–सेनानी इस जेल के सींखचों में बंद न हों। कल की काल–कोठरी, आज राष्ट्रीय गौरव है। कल की उनकी यातना, हमारे इतिहास का सुनहरा पृष्ठ है।" पूर्वजों का गौरवमय इतिहास वर्तमान पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उत्तरशती के यात्राकारों ने इतिहास में अंतर्निहित बोध को स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त किया है। हिटलर जैसे आततायियों का इतिहास अनियंत्रित शासन व्यवस्था के भयावह परिणामों की ओर इंगित करता है। दूसरी ओर इतिहास में मानवीय गुणों के उज्वलतम पक्ष को भी खोजा जा सकता है। इतिहास का वर्तमान जीवन पर एवं समाज मन पर किसी न किसी रूप में प्रभाव अवश्य पाया जाता है। अतः इतिहास आज पथदर्शक रूप में सामने आता है।

संदर्भ

1. अपोलो का रथ श्रीकांत वर्मा
2. यात्राचक्र धर्मवीर भारती
3. यात्रा की पगडंडियाँ रामनारायण उपाध्याय
4. सैलानी की डायरी राजेंद्र अवस्थी
5. कहीं सुबह कहीं शाम शंकर दयाल सिंह